शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

सारिका शर्मा (शोधार्थी)
डॉ.सरोज राय (निर्देशक)
जैन विश्व भारती, लाडनूं
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

वर्तमान में बालिकाएं और महिलाएं असुरक्षा का अनुभव करती हैं पितृ सत्तात्मक परिवार होने से स्त्री हमेशा से पालित और रक्षित के श्रेणी में बनी रही। समाज के सारे प्रयास महिला को सुरक्षित करने के रहे हैं। परिणामस्वरूप उसे अनेक प्रकार के बंधनों को स्वीकार करने पर विवश किया गया। महिला ने भी उन बंधनों को स्वीकार कर लिया। यद्यपि आज समय के साथ वे बंधन ढीले हुए हैं परन्तु अदृश्य बंधन आज भी मौजूद हैं इन दिनों विद्यालयीन शिक्षा में बालिकाओं को 'स्वरक्षा' अथवा आत्मरक्षा के प्रशिक्षण को शामिल किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च माध्यमिक स्तर की छात्रों में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य एक ऐसे ज्ञान का विकास करना है, जिसका व्यावहारिक पक्ष हमारी राष्ट्रीय प्रेरणाओं पर आधारित हो। जिससे हमारे शैक्षिक प्रयास एवं विचारधारायें पुनर्जीवित हो सकें। अतः ऐसा प्रयास करना चाहिए जिससे शैक्षिक प्रणाली मानव और पदार्थ को उत्पादन कार्य में तल्लीन कर सकें और जिससे कार्यकर्ता ऐसे ज्ञान का विकास कर सकें, जो शिक्षा को सार्थक एवं यथार्थ बना सकें।

"कैसे देख सकती हूँ हर औरत को अपराधियों के आगे घुटने टेकते हुए बढ़ाना होगा आत्मरक्षा का सशक्त कदम, अपराधियों के हौसले पस्त करते हुए" भारत में बलात्कार, यौन उत्पीड़न, छेड़खानी, महिलाओं के प्रति हिंसा आदि सामान्य तौर पर घटित होने वाली घटनाएँ बन गई है। ये घटनाएँ सामाजिक लांछन या बदले के डर से पूरी तरह सामने नहीं आ पाती हैं और जो घटनाएं सामने आती हैं वे हमें समाज की वो भयावह तस्वीर दिखाती है, जो हमारी कल्पनाओं से परे है। बालिकाओं के साथ बलात्कार और उसके बात हत्या करने के अनेक मामले इन दिनों प्रकाश में आ रहे हैं। इन घटनाओं के मद्देनजर बालिकाओं और महिलाओं को सुरक्षित करने के उपायों के अलावा उन्हें आत्मरक्षा के साधन और तकनीक से लेस करना अनिवार्य प्रतीत होने लगा है।

समस्या का औचित्य

जागरूकता हर प्रशिक्षण की नींव होती है। अपनी समस्या को जानना, कारणों को खोजना व जागरूक होकर उपायों को तलाश करना समाधान की दिशा में सशक्त कदम होता है। महिला को अपनी आत्मरक्षा के प्रति स्वयं सजग होकर खुद को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। यह एक ऐसा कदम हैं जो उन्हें

बिना किसी अन्य की मदद से मौजूदा स्थिति से निपटने में मददगार साबित होगा। इस तरह के प्रशिक्षण शिक्षकों को प्रोत्साहित करेंगे कि वे अपने विद्यार्थियों को आत्मरक्षा के कौशल को अपने ऊपर अन्याय करने के विरुद्ध उपयोग कर सकें। अगर ये प्रशिक्षण प्राथमिक स्तर से ही छात्राओं को दिया जाये तो वे आत्म सम्मान को शारीरिक व मानसिक दोनों दृष्टियों से निखार सकेंगी। इन प्रशिक्षण के द्वारा महिलाओं के आत्मविश्वास व संवेगात्मक परिपक्वता को उच्चतम स्तर तक बढ़ाया जा सकता है।

स्वास्थ्य शिक्षा के अनुसार आत्मरक्षा प्रशिक्षण प्राप्त महिलाओं और लड़कियों पर अन्याय होने का ख़तरा कम होता है। आत्मरक्षा का प्रशिक्षण विद्यार्थी को ज्यादा आत्मविश्वासी, विश्लेषक और जागरूक बनाता है। इस प्रशिक्षण से महिला में दृढ़ता, आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और एकाग्रता बढ़ती है तथा दुश्चिन्ता व तनाव को घटता है। वर्तमान अध्ययन निर्देशित करते हैं कि मौखिक क्रोधी व उत्तेजित शारीरिक प्रतिकार अर्थपूर्ण ढंग से बलात्कार को रोकते हैं। अतः इस प्रशिक्षण में निपुण प्रशिक्षणार्थी अपने आत्म-सम्मान व आत्मविश्वास को पूरी तरह परिष्कृत कर सकते हैं तथा समाज में बढ़ते अपराधों को कम कर सकते हैं।

शोध के उद्देश्य

1. ग्रामीण व शहरी विद्यालय की बालिकाओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
3. शहरी सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रषिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण सरकारी विद्यालय की विज्ञान व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
5. ग्रामीण गैर-सरकारी विद्यालय की विज्ञान व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
6. शहरी सरकारी विद्यालय की विज्ञान व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
7. शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की विज्ञान व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
8. ग्रामीण व शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
9. ग्रामीण व शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
10. ग्रामीण सरकारी व शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

11. ग्रामीण गैर सरकारी व शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

1. ग्रामीण व शहरी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. ग्रामीण सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. शहरी सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. ग्रामीण सरकारी विद्यालय के विज्ञान व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. ग्रामीण गैर सरकारी विद्यालय की विज्ञान व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
6. शहरी सरकारी विद्यालय की विज्ञान व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
7. शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की विज्ञान व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
8. ग्रामीण सरकारी व शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
9. ग्रामीण गैर-सरकारी व शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
10. ग्रामीण सरकारी व शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
11. ग्रामीण गैर-सरकारी व शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु उच्च माध्यमिक विद्यालयों की 120 छात्राओं को लिया गया है।

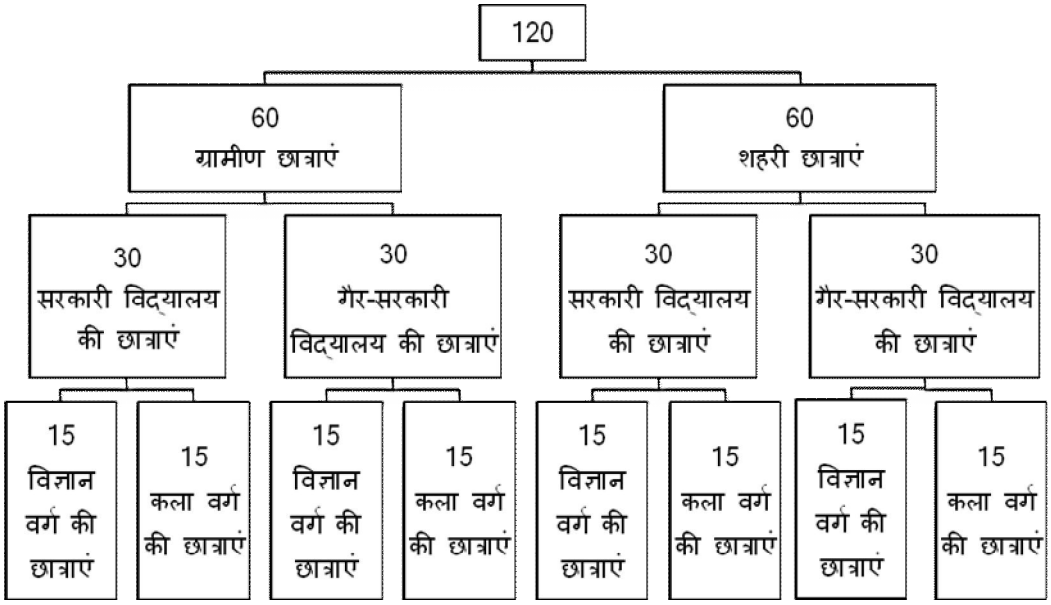

उपकरण : शोध अध्ययन में अध्ययनार्थ सवनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि : सर्वेक्षण विधि।

सांख्यिकी : मध्यमान, प्रमाप विचलन व t-test.

आंकड़ों का विश्लेषण

परिकल्पना - 1

ग्रामीण विद्यालय व शहरी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

तालिका - 1

क्र.स.	विद्यार्थी वर्ग	समूह (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	टी मान	सार्थकता स्तर	स्वीकृति
1	ग्रामीण	60	185.26	14.75	0.39	0.05→ 1.98	परिकल्पना
2	शहरी	60	186.29	13.79		0.01→ 2.62	स्वीकृत

df= $N_1 + N_2 - 2 = 60 + 60 - 2 = 118$

व्याख्या व विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या-1 ग्रामीण विद्यालय की छात्राओं व शहरी विद्यालय की छात्राओं के आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। निराकरणीय परिकल्पना ग्रामीण व शहरी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 2

ग्रामीण सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

तालिका - 2

क्र.स.	विद्यार्थी वर्ग	समूह (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	टी मान	सार्थकता स्तर	स्वीकृति
1	ग्रामीण सरकारी छात्राएँ	30	187.26	13.56	1.03	0.05→ 2.00	स्वीकृत
2	ग्रामीण गैर सरकारी छात्राएँ	30	183.26	15.85		0.01→ 2.66	स्वीकृत

$df=N_1 + N_2 - 2= 30 + 30 - 2 = 58$

व्याख्या व विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या-2 ग्रामीण सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं के आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। निराकरणीय परिकल्पना ग्रामीण सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 3

शहरी सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

तालिका-3

क्र.स.	विद्यार्थी वर्ग	समूह (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	टी मान	सार्थकता स्तर	स्वीकृति
1	ग्रामीण सरकारी छात्राएँ	30	185.13	13.83	0.64	0.05→ 2.00	स्वीकृत
2	शहरी गैर सरकारी छात्राएँ	30	187.46	13.74		0.01→ 2.66	

$df= N_1 + N_2 - 2 = 30 + 30 - 2 = 58$

व्याख्या व विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या-3 शहरी सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं के आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। निराकरणीय परिकल्पना शहरी सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 4

ग्रामीण सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

तालिका - 4

क्र.स.	विद्यार्थी वर्ग	समूह (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	टी मान	सार्थकता स्तर	स्वीकृति
1	विज्ञान वर्ग	15	186.73	17.11	0.20	0.05→ 2.05	स्वीकृत
2	कला वर्ग	15	187.80	8.64		0.01→ 2.76	

df= $N_1 + N_2 - 2 = 15 + 15 - 2 = 28$

व्याख्या व विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या-4 ग्रामीण सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं के आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। निराकरणीय परिकल्पना ग्रामीण सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 5

ग्रामीण गैर-सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

तालिका - 5

क्र.स.	विद्यार्थी वर्ग	समूह (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	टी मान	सार्थकता स्तर	स्वीकृति
1	विज्ञान वर्ग	15	184.13	17.68	0.28	0.05→ 2.05	स्वीकृत
2	कला वर्ग	15	182.40	13.78		0.01→ 2.76	

df= $N_1 + N_2 - 2 = 15 + 15 - 2 = 28$

व्याख्या व विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या-5 ग्रामीण गैर-सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। निराकरणीय परिकल्पना ग्रामीण गैर-सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 6

शहरी सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका - 6

क्र.स.	विद्यार्थी वर्ग	समूह (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	टी मान	सार्थकता स्तर	स्वीकृति
1	विज्ञान वर्ग	15	184.53	17.40	1.68	0.05→ 2.05	स्वीकृत

2	कला वर्ग	15	180.73	8.90		0.01→ 2.76	

df= $N_1 + N_2 - 2 = 15 + 15 - 2 = 28$

व्याख्या व विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 6 शहरी सरकारी विद्यालय के विज्ञान वर्ग व कला वर्ग के छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। अतः निराकरणीय परिकल्पना शहरी सरकारी विद्यालय के विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 7

शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका - 7

क्र.स.	विद्यार्थी वर्ग	समूह (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	टी मान	सार्थकता स्तर	स्वीकृति
1	विज्ञान वर्ग	15	185.46	15.23	0.77	0.05→ 2.05	स्वीकृत
2	कला वर्ग	15	189.46	12.07		0.01→ 2.76	

df= $N_1 + N_2 - 2 = 15 + 15 - 2 = 28$

व्याख्या व विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 7 शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग के छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। निराकरणीय परिकल्पना शहरी सरकारी विद्यालय के विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 8

ग्रामीण सरकारी व शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका - 8

क्र.स.	विद्यार्थी वर्ग	समूह (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	टी मान	सार्थकता स्तर	स्वीकृति
1	ग्रामीण सरकारी	30	187.26	13.56	0.59	0.05→ 2.00	स्वीकृत
2	शहरी सरकारी	30	185.13	13.83		0.01→ 2.66	

df= $N_1 + N_2 - 2 = 30 + 30 - 2 = 58$

व्याख्या व विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 8 ग्रामीण सरकारी व शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। निराकरणीय परिकल्पना ग्रामीण सरकारी व शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 9

ग्रामीण गैर-सरकारी व शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका - 9

क्र.स.	विद्यार्थी वर्ग	समूह (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	टी मान	सार्थकता स्तर	स्वीकृति
1	ग्रामीण गैर सरकारी	30	183.26	15.85	1.07	0.05→ 2.00	स्वीकृत
2	शहरी गैर सरकारी	30	187.46	13.74		0.01→ 2.66	

df= N_1 + N_2 - 2 = 30 + 30 -2 = 58

व्याख्या व विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 9 ग्रामीण गैर सरकारी व शहरी गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। निराकरणीय परिकल्पना ग्रामीण गैर-सरकारी व शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 10

ग्रामीण सरकारी व शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका - 10

क्र.स.	विद्यार्थी वर्ग	समूह (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	टी मान	सार्थकता स्तर	स्वीकृति
1	ग्रामीण सरकारी	30	187.26	13.56	0.055	0.05→ 2.00	स्वीकृत
2	शहरी गैरसरकारी	30	187.46	13.74		0.01→ 2.66	

df= N_1 + N_2 - 2 = 30 + 30 - 2 = 58

व्याख्या व विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 10 ग्रामीण सरकारी व शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। निराकरणीय परिकल्पना ग्रामीण सरकारी व शहरी गैर-सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 11 -

ग्रामीण गैर-सरकारी व शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका - 11

क्र.स.	विद्यार्थी वर्ग	समूह (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	टी मान	सार्थकता स्तर	स्वीकृति
1	ग्रामीण गैर-सरकारी	30	183.26	15.85	0.47	0.05→ 2.00	स्वीकृत
2	शहरी गैर सरकारी	30	185.13	13.83		0.01→ 2.66	

$df = N_1 + N_2 - 2 = 30 + 30 - 2 - 58$

व्याख्या व विश्लेषण

उपर्युक्त तालिका संख्या 11 ग्रामीण गैर-सरकारी व शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता को दर्शाती है। निराकरणीय परिकल्पना ग्रामीण गैर-सरकारी व शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राओं मे आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत की जाती है।

शोध के निष्कर्ष

1. ग्रामीण विद्यालय व शहरी विद्यालय की बालिकाओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष निकलता हैं कि ग्रामीण व शहरी विद्यालय दोनों के परिवेष में भिन्नता होते हुए भी बालिकाओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में समानता पाई जाती है।

2. ग्रामीण सरकारी विद्यालय के विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

इससे निष्कर्ष निकलता हैं कि एक ही प्रकार के ग्रामीण परिवेश में विद्यालयी वातावरण भिन्न होते हुए भी छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में समानता पाई जाती है।

3. शहरी सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय की बालिकाओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

इससे निष्कर्ष निकलता हैं कि एक ही प्रकार के शहरी वातावरण में विद्यालयी भिन्नता होते हुए भी बालिकाओं में आत्मरक्षा से सम्बन्धित विचारों और जागरूकता में समानता पाई जाती है।

4. ग्रामीण सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। इससे निष्कर्ष निकलता हैं कि ग्रामीण और सरकारी परिवेश में विषयगत भिन्नताओं के बावजूद बालिकाओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में समानता पाई जाती है।

5. ग्रामीण गैर सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।" इससे निष्कर्ष निकलता हैं कि ग्रामीण गैर

सरकारी विद्यालय में भिन्न भिन्न विषयों व भिन्न रूचि के बावजूद बालिकाओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

6. "शहरी सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।"

इससे निष्कर्ष निकलता है कि शहरी माहौल में छात्राओं को समान परिस्थितियों व घटनाओं का सामना करना पड़ता है। अतः विषयी भिन्नता के बावजूद छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में समान भाव पाया जाता है।

7. "शहरी गैर सरकारी विद्यालय की विज्ञान वर्ग व कला वर्ग की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।"

इससे निष्कर्ष निकलता है कि शहरी गैर सरकारी विद्यालय की बालिकाओं को समान समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः विषयों में भिन्न रूचि के बावजूद छात्राओं में आत्मरक्षा के प्रति जागरूकता में समानता पाई जाती है।

8. ग्रामीण सरकारी व शहरी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

इससे निष्कर्ष निकलता हैं भिन्न वातावरण में सरकारी माहौल की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में समानता पाई जाती है।

9. ग्रामीण गैर सरकारी व शहरी गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

इससे निष्कर्ष निकलता हैं कि गैर सरकारी विद्यालयों के भिन्न परिवेश व ग्रामीण व शहरी भिन्न वातावरण होने के बावजूद आत्मरक्षा से सम्बन्धित तथ्यों में बालिकाओं में समानता पाई जाती है।

10. "ग्रामीण सरकारी व शहरी गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।"

इससे निष्कर्ष निकलता हैं ग्रामीण और शहरी वातावरण में सरकारी व गैर सरकारी भिन्न भिन्न विद्यालयी परिवेश के होते हुए भी छात्राओं में आत्मरक्षा से संबधित विचार व जागरूकता में समानता पाई जाती है।

11. "ग्रामीण गैर सरकारी व शहरी सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।"

इससे निष्कर्ष निकलता हैं कि ग्रामीण व शहरी वातावरण व विद्यालयी गैर सरकारी व सरकारी भिन्न भिन्न वातावरण होने के बाद भी दोनों परिवेश की छात्राओं में आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता में समानता पाई जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थ निम्न है -

1. प्रस्तुत शोध को सम्बन्धित साहित्य के रूप में अध्ययन किया जा सकता है और भावी शोध के लिए अध्ययन का बिन्दु भी लिया जा सकता है।

2. प्राचार्य अपने विद्यालय में आत्मरक्षा प्रशिक्षण लागू कर सकते है।

3. प्राचार्य आत्मरक्षा से संबंधित नियमों व कानूनों की जानकारी प्रदान करवा सकते है।

4. शिक्षक इस शोध के द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर छात्राओं को श्रेणियों में विभक्त कर उन्हें प्रशिक्षण हेतु तैयार कर सकते है।

5. अभिभावक स्यं को जागरूक बनाकर अपनी पुत्रियों को जागरूक करने में योगदान दे सकते है।

6. समाज अपने स्तर स्वयं मुस्तैद रहकर ऐसी संस्थाओं का निर्माण कर सकते हैं जो स्वायत्त रूप से कार्य कर महिलाओं को प्रशिक्षण दे सकते है।

7. समाज, समाज के वरिष्ठ व्यक्तियों की मदद से विभिन्न योजनाओं को क्रियान्वित कर सकते है जो महिला के अधिकारों व प्राप्त विभिन्न रियायतों की जानकारी उपलब्ध करवा सकते हैं।

8. भाई-बहन परस्पर एक दूसरे की भावनाओं को समझकर उन्हें घटना के उचित मार्गदर्शन कर प्रोत्साहित कर सकते हैं।

9. सहपाठी स्वयं समर्थ होकर अपने मित्रों को आत्मरक्षा प्रशिक्षण हेतु प्रेरित कर ऐसे प्रशिक्षण व प्रशिक्षणार्थियों को बढ़ावा दे सकते हैं।

10. व्यक्ति स्वयं अपना भाग्य निर्माता होता हैं। अतः किसी अन्य की अपेक्षा महिला को स्वयं अपने सशक्त कदम उठाकर प्रशिक्षण हेतु तत्पर होना चाहिए।

11. सरकार को उन प्रशिक्षणों के प्रोत्साहन हेतु विशेष योजनाएं बनाकर इनका क्रियान्वयन करवाना चाहिए।

12. सरकार को ऐसी समितियाँ बनानी चाहिए जो समय-समय पर सर्वे कर आत्मरक्षा प्रशिक्षण से वंचित महिलाओं को इससे जोड़े व उन्हें अधिनियमों की जानकारी दी जाए।

13. विद्यालय में प्राथमिक स्तर से ही ऐसे प्रशिक्षणों की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि छात्राएं अधिक से अधिक लाभान्वित हो पायें।

14. विद्यालय में ऐसी समितियाँ बनायी जायें, जो अवांछनीय घटनाओं पर विचार-विमर्श कर छात्राओं को सही सुझाव व सही मार्गदर्शन कर सकें।

संदर्भ ग्रन्थ

- *जायसवाल डॉ. सीताराम (1970), शिक्षा मनोविज्ञान न्यू बिल्डिंगस लखनऊ*
- *वेस्ट, जॉन डब्ल्यू (1980), रिसर्च इन एज्यूकेशान, प्रिंटिग हाल ऑफ़ इण्डिया प्रा. लि. नई दिल्ली।*
- *पाठक पी.डी. (1980), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
- *रायजादा डॉ..बी.एस. (1997), शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर*
- *बधेला हेत सिंह (1998), शिक्षा तथा भारतीय समाज*
- *कपिल एच. के (1998), अनुंसधान विधियाँ, एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा*
- *शर्मा आर. ए. (2000), शिक्षा अनुंसधान, आर.लाल बुक डिपो, मैरठ*
- *कपिल एच.के. (2000), सांख्यिकी के मूल तत्व, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा*
- *सुखिया एस.पी. (2002), शैक्षिक अनुंसधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा*
- *पचौरी डॉ. गिरीश (2003), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा लायल बुक डिपो, मेरठ*
- *शर्मा आर.एस. (2004), शोध प्रबन्ध लेखन, कमल बुक डिपो, मेरठ*

- *पाठक पी.डी. (2004), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा*
- *भटनागर सुरेश (2004), बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ*
- *शर्मा आर.ए. (2005), शिक्षा अनुसंधान सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ*
- *अग्रवाल डॉ. संध्या (2005), शिक्षा मनोविज्ञान, विजय प्रकाशन मन्दिर, आगरा*
- *शर्मा, डॉ..मंजू (2005), किशोरावस्था की समस्याएँ, जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर*
- *भटनागर सुरेश (2005), अधिगम एवं विकास के मनो सामाजिक और इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ*
- *अस्थाना बी. एव अस्थाना एस. (2005), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन विनोद पुस्तक आगरा*
- *शर्मा गणपतराय एवं व्यास हरिशचन्द्र (2006), अधिगम शिक्षण और विकास के मनोसामाजिक आधार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।*
- *श्रीवास्तव डी. एन. (2006), अनुसंधान विधियाँ साहित्य प्रकाशन, आगरा*
- *शर्मा विरेन्द्र प्रकाश (2006) - रिसर्च मेथेडालोजी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।*
- *शर्मा आर. ए. (2006), शिक्षा अनुसंधान इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर।*
- *मिश्रा डॉ.. एम. कुमार (2007) - किशोर मनोविज्ञान, यूनिवसिर्टी बुक हाऊस प्रालि.*
- *शर्मा डॉ.. मंजू (2007), किशोरावस्था की समस्याएं, शील प्रकाशन जयपुर*
- *मिश्रा डॉ. महेन्द्र कुमार (2007), किशोर मनोविज्ञान, यूनिवसिर्टी बुक हाऊस प्रालि.*
- *मंगल एस. के (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, प्रिंटिग्स हाल आफ इण्डिया प्रालि. नई दिल्ली।*
- *राय. पारसनाथ एवं राय. सी.पी. (2010), अनुसंधान परिचय लक्षमीनारायण अग्रवाल, आगरा*
- *सिंह अरूण कुमार (2010), मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली।*

जनरल्स और सर्वे

- *इण्डियन एजुकेशन एबस्ट्रेक्ट - जुलाई 1998, एन.सी..ई.आर.टी*
- *इण्डियन एज्यूकेशन एबस्ट्रेक्ट, वाल्यूम नम्बर 4 (फरवरी 2005) एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।*
- *बुच. एम. बी. (1987), ए सर्वे आफ रिसर्च इन एज्यूकेशन तृतीय सर्वे*
- *बुच एम. बी. (1994), ए सर्वे आफ रिसर्च इन एज्यूकेशन*
- *जनरल आफ इण्डियन अकादमी आफ ए लाइट साइकोलाजी (जनवरी जुलाई 1996)*
- *Marge heyden, tiel jackson billie anger and todd eilner (1999) " Fighting back works: The case for advocating and teaching self defense against rape. From He journal of physical education recreation and dance.*
- *Internet Source*
- *www.selfdefenseforgirls.com*